हम विज्ञान के रहस्यों का पता लगाएंगे और प्रौद्योगिकी एवं नवाचार की शक्ति का उपयोग करेंगे। हम डिजिटल दुनिया के अवसरों का एहसास करेंगे। हमारे युवा एक-दूसरे से और अधिक सीखेंगे।.... - श्री नरेंद्र मोदी

कनेक्ट

वर्ष.-5, अंक-6 जून-2019

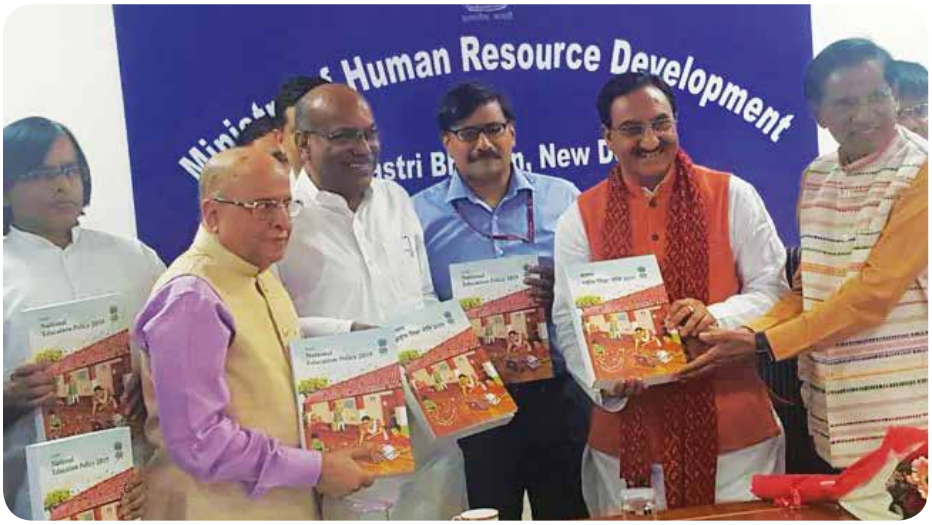

सामुदायिक सहभागिता, अनुभवजन्य अधिगम और ग्रामीण शिक्षा को शामिल करने के लिए नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति अपने साथ व्यापक बदलाव लाती है, जो देश के लिए सकारात्मक कदम है। उच्च शैक्षणिक संस्थानों द्वारा सामाजिक योगदान परिषद या समुदाय अनुबंध परिषद की स्थापना से उन्हें स्थानीय समुदायों और व्यापक समाज में प्रभावी रूप से योगदान मिलेगा। इन परिषदों को प्रासंगिक लोगों के साथ फिर से जोड़ा जाएगा और प्राध्यापक को उनकी विशेषज्ञता के माध्यम से इन प्रयासों में योगदान करने की उम्मीद की जाएगी, जो उनके मूल्यांकन का एक हिस्सा बनेगा। प्रत्येक विषय के भीतर एक बेहतर शिक्षक शिक्षा और अनुभवजन्य अधिगम को और अधिक विशिष्ट विषयों की शुरूआत पर जोर दिया जाएगा। संवादात्मक कक्षाएं अनुभवात्मक अध्ययन की यूएसपी है। विभिन्न आजीविका और जीवनशैली (जैसे बागवानी, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के काम, बिजली के काम, और कई अन्य) -प्राथमिक स्तर पर पढ़ाए जाने वाले आधार स्तरों पर व्यावसायिक प्रशिक्षण, छात्रों को उच्च विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने से पहले इन व्यवसायों में रुचि पैदा कराएगा। विद्यालयों में आजीविका और संबंधित कौशल का एक उपवर्ग चुनने का विकल्प होता है, जो स्थानीय समुदाय के लिए महत्वपूर्णहैं। स्थानीय कारीगर और चिकित्सक मार्गदर्शक होंगे, जिसका अर्थ है अपने आप से सीखना! पाठ्यक्रम निर्माण के वितरित ढ़ांचे के साथ पाठ्यक्रम को स्थानीय लोगों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा के अनुभवजन्य घटक को एसकेपी द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिए, और और बाकियों को शिक्षण संस्थान या BOA द्वारा पीएसआईवीईआईवीई और राज्य स्तर के संस्थानों एवं बीओए के संयोजन में एनसीआईवीई के द्वारा एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम चुनने में छात्रों को अधिक स्वतंत्रता देकर उन्हें सशक्त बनाना यह एक महत्वपूर्ण तनाव निवारक है। यह पाठ्यक्रम सामग्री के बोझ को कम करता है, बेहतर एवं सूक्ष्म समझ, विश्लेषण और अनिवार्य पाठ्यक्रम में चर्चा के लिए अनुमति देता है। और छात्रों को पाठ्यक्रम के विषयों का पता लगाने के लिए जगह भी देगा। इससे खासकर छात्रों को माध्यमिक विद्यालय में अपने पाठ्यक्रमों को चुनने में अधिक लचीलापन मिलेगा। विकल्प उन्हें अध्ययन में अपनी वरीयताओं को चुनने में मदद करेंगे और बाद में करियर में भी।

छात्र स्वयं के अनुभवों, रुचियों और आत्म-प्रतिबिंबों के माध्यम से सीखते हैं। “व्यावसायिक” और “शैक्षणिक” धाराओं के बीच की दीवार को गिराने की आवश्यकता है क्योंकि छात्रों को दोनों प्रकार की क्षमता विकसित करने का अवसर मिलेगा। सभी पेशों के सम्मान को बढ़ावा देने के लिए शुरुआती चरणों में झुकाव की आवश्यकता है ताकि जीवन में बाद में कोई पक्षपात न हो।

शैक्षिक रूप से वंचित ग्रामीण क्षेत्रों में से प्रत्येक में स्नातक कार्यक्रमों के साथ एकीकृत उच्च गुणवत्ता वाली एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाली एक उच्च शिक्षा संस्था होगी। ग्रेड 12 तक व्यावसायिक शिक्षा का समर्थन करने के लिए अपने क्षेत्रों के भीतर विद्यालयों, आईटीआई और / या पॉलिटेक्निक के साथ काम करेगी। नई शिक्षा नीति का प्रारूप समिति द्वारा देश के नए मानव संसाधन विकास (एचआरडी) मंत्री श्री रमेश पोखरियाल को सौंप दिया गया है, जो 2017 में गठित किया गया था और इसका नेतृत्व पूर्व इसरो प्रमुख डॉ. के कस्तूरीरंगन ने किया था।

संपादक की टिप्पणी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रगतिशील शैक्षिक सुधारों को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। यह भारत के परिसरों को स्थापित करने के लिए विदेशी भिन्नताओं की भी सिफारिश करता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मुख्य विशेषताओं में पूरी तरह से निरिक्षण करना बोर्ड परीक्षाएं शामिल हैं: अध्ययन की विभिन्न धाराओं के बीच अंतर को दूर करना । विषयों का चयन करने और अधिक भाषाओं में सीखने की स्वतंत्रता देना । शिक्षकों के प्रशिक्षण में परिवर्तन । विद्यालय फीस विनियमन और एक नए चार वर्षीय बहु-विषयक उन्मुक्त कला स्नातक पाठ्यक्रम। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय आयोग भी भारत की अगली शिक्षा नीति के हिस्से के रूप में अनुशंसित प्रमुख परिवर्तनों में से एक है।

रटन विधि को अधिक व्यावहारिक शिक्षण और मूल्यांकन विधियों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा। मसौदा में कहा गया है कि "पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र को 2022 तक बदल दिया जाता है ताकि दुहराव सीखने को कम किया जा सके और इसके बजाय समग्रता को बढ़ावा दिया जा सके। 21 वीं सदी के कौशल जैसे महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता, वैज्ञानिक स्वभाव, संचार, सहयोग, बहुभाषावाद, समस्या समाधान, नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और डिजिटल साक्षरता" पैनल, कोचिंग सेंटर संस्कृति को बढ़ाता है, जो तनाव के स्तर को बढ़ाता है । ग्रेड IX और XII के बीच चार वर्षों में विस्तारित एक लचीली प्रणाली के लिए समर्थन करता है । जिसमें छात्र सेमेस्टर में एक विषय में बोर्ड परीक्षा दे सकते हैं और वे अध्ययन भी कर सकते हैं। जब कंप्यूटर आधारित अनुकूली परीक्षा शुरू की जा सकती है तो छात्रों को परीक्षणों को फिर से लेने की अनुमति दी जा सकती है।

पैनल ने नियामक परिवर्तनों के लिए एक आह्वान भी दिया है यूजीसी जैसी संस्थाएं न केवल धनराशि वितरित करती हैं बल्कि अधिनियम भी लागू करती हैं। उच्च शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक प्राधिकरण की स्थापना और विद्यालयों के लिए समान निकायों की परिकल्पना की गई है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम भी 2030 तक सभी छात्रों के लिए मुफ्त और अनिवार्य गुणवत्ता वाली माध्यमिक शिक्षा की उपलब्धता के लिए माध्यमिक शिक्षा को समाविष्ट करने की आवश्यकता है। चार वर्षीय एकीकृत राज्य विशिष्ट बीएड कार्यक्रम अंततः शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता होगी।

"ज्ञान में भारतीय योगदान और ऐतिहासिक संदर्भ जो उन्हें आगे ले गए, मौजूदा स्कूल पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों में जहां भी प्रासंगिक हो," नीति के मसौदे को शामिल किया जाएगा।

चिकित्सा क्षेत्र में, एमबीबीएस के लिए एक आम निकास परीक्षा, प्रस्तावित (जिस तरह एनईईटी को एक आम के रूप में पेश किया गया है एमबीबीएस के लिए प्रवेश परीक्षा) हैं । यह स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा को दोगुना कर देगा और छात्रों को उनके निवास अवधि के अंत में एक अलग एवं प्रतिस्पर्धी प्रवेश परीक्षा के लिए अध्ययन के बोझ से छुटकारा मिल जाएगा । इस प्रकार वे अन्य मुख्य कौशल सीखने के लिए अपने समय का उपयोग करते हैं। इसी तरह, दंत चिकित्सा और अन्य विषयों में भी इस तरह की आम निकास परीक्षा हो सकती है।

चार वर्षीय बीएड कार्यक्रम 2030 तक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता बन जाएगा।

शिक्षण पेशे को लगातार उन्नत करने की आवश्यकता है और इसलिए सभी पेशे के शिक्षक अधिगम कार्यक्रमों को शिक्षण पेशे की आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केवल बहु-विषयक उच्च शिक्षण संस्थानों में पेश किया जाएगा। यह शिक्षकों को बहु-विषयक के रूप में उजागर करेगा और उन्हें अधिक प्रभावी एवं प्रतिस्पर्धी बनाएगा।

उच्च शिक्षा संस्थाएँ अपने अकादमिक विषय शक्ति और विशेष क्षेत्रों के आधार पर समग्र शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम विकसित करेगा। शिक्षाशास्त्र, पाठ्यक्रम, समाजशास्त्र, इतिहास, विज्ञान, दर्शन, मनोविज्ञान, बचपन की शिक्षा, प्रारंभिक साक्षरता एवं संख्यात्मकता, भारत के ज्ञान एवं इसके मूल्यों / लोकाचार / कला / परंपराओं और अन्य विषयों के अलावा शिक्षकों को भी पढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। सरकार उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षा विभागों और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की स्थापना का समर्थन करेगी। बीएड कार्यक्रम शिक्षा में और साथ ही एक विशेष विषय (जैसे भाषा या इतिहास, संगीत, गणित, कंप्यूटर विज्ञान, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र, आदि) में एक दोहरी-प्रमुख उदार स्नातक की डिग्री होगी। उन छात्रों के लिए जिन्होंने पहले से ही स्नातक की डिग्री ली है, लेकिन शिक्षण पेशे को आगे बढ़ाने के इच्छुक हैं, प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्था चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. की पेशकश करता है। अपने परिसर में दो साल का बी.एड. डिजाइन भी कर सकता है। अन्य , विशिष्ट और अनुकूलित बी.एड. शिक्षण के प्रति झुकाव के साथ असामान्य रूप से उच्च योग्य व्यक्तियों के लिए उच्च शिक्षा संस्था द्वारा कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं। एमजीएनसीआरई ने ग्रामीण सामुदायिक अनुबंध और नई तालीम-अनुभवजन्य शिक्षा सहित ग्रामीण लचीलापन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं इस क्षण का उपयोग स्वर्गीय डॉ. टी. करुणाकरन को याद करने और उन्हें प्रणाम करने के लिए भी करता हूँ, जो जीवन भर नई तालीम और अनुभवजन्य शिक्षा के सिपाही बने रहे हैं। उनके अथक प्रयास अब फल फूल रहे हैं। नई शिक्षा नीति सामुदायिक अनुबंध, अनुभवजन्य शिक्षा और ग्रामीण शिक्षा पर केंद्रित है, जो हमारे प्रयासों को और अधिक महत्त्वपूर्ण बनाती है।

डॉ. डब्ल्यू जी प्रसन्ना कुमार,
अध्यक्ष, एमजीएनसीआरई

उन्नत भारत अभियान (यूबीए) का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों को कम से कम पांच गांवों से जोड़ना है, जिसे वे आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान कर सकें। यह एक दो-तरफा सीखने की प्रक्रिया है । जिसमें संस्थाओं और गांवों - दोनों को पारस्परिक ज्ञान साझा करने से लाभ होता है। यूबीए का मिशन उच्च शिक्षा संस्थानों को ग्रामीण भारत के लोगों के साथ विकास की चुनौतियों की पहचान करने के साथ-साथ स्थायी विकास में तेजी लाने के लिए उचित समाधान विकसित करने में सक्षम बनाना है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत, यूबीए के मिशन द्वारा स्थानीय सरकार के समन्वय में काम करते हुए प्राध्यापक और छात्रों की भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की प्रगति के लिए उच्च शिक्षा के प्रमुख संस्थाओं में उपलब्ध प्रौद्योगिकी को बदलना केंद्र सरकार का एक सपना है । आईआईटी-नई दिल्ली नामित राष्ट्रीय समन्वय संस्थान (एनसीआई) है, और देश भर में आईआईटी, एनआईटी, एनआईटीटीटीआर, केंद्रीय विश्वविद्यालयों और कृषि विश्वविद्यालयों सहित 40 प्रमुख संस्थानों की पहचान क्षेत्रीय समन्वय संस्थानों (आरसीआई) से की गई। मुझे खुशी है कि एमजीएनसीआरई ने उत्साह से भाग लिया है और यूबीए के मिशन और विज़न का पालन करने का संकल्प लिया है। नई शिक्षा नीति अब शिक्षक शिक्षा में सहयोगी और अनुभवजन्य अधिगम पर जोर देती है, जिसे एमजीएनसीआरई पूर्ण रूप से समर्थन करता रहा है। यह ध्यान देने योग्य है कि शिक्षण और सीखने का प्रयास एवं अधिक संवादात्मक तरीके से प्रश्न-उत्तर सत्र के साथ किया जाएगा । और कक्षाओं में अधिक रचनात्मक, सहयोगी, खोजपूर्ण, व्यावहारिक, अधिक महत्त्वपूर्ण रूप से मजेदार तथा अनुभवजन्य होगा।

डॉ. भरत पाठक
उपाध्यक्ष, एमजीएनसीआरई

उन्नत भारत अभियान (यूबीए) -आगे बढ़ने का रास्ता

उन्नत भारत अभियान (यूबीए) भारत के एमएचआरडी का एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसमें समावेशी भारत के लिए स्वनिर्भर और चिरस्थायी ग्राम समूहों के स्वदेशी विकास के लिए देश के उच्च शिक्षा संस्थानों को अंतर्भूत करना शामिल है। एमजीएनसीआरई क्षेत्रीय समन्वय संस्थान (आरसीआई) है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण सामुदायिक अनुबंध के लिए तकनीकी अभिविन्यास कार्यक्रमों की सुविधा में सहभागी संस्थानों के साथ सहयोग करना है। एमजीएनसीआरई द्वारा विकसित संरचित यूबीए कार्यक्रम गतिविधियां और सामग्री जिसमें सामुदायिक अनुबंध के बारे में अधिगम के साथ-साथ छात्रों को प्रासंगिक भागीदारी प्रथाओं को सीखना, ग्रामीण वास्तविकताओं और जीवन-कौशल की खोज करना शामिल है। वे इंटर्नशिप से भी लाभान्वित होते हैं। हमारा मिशन उन संस्थानों की पहचान करना और उन्हें अंतिम रूप देना है, जो एमजीएनसीआरई के समर्थन से एक संरचित तरीके से (यूबीए) की गतिविधियों को शामिल करने के लिए खुद को संरेखित करेंगे।.

मुख्य क्रिया बिंदु

संस्थाएँ पाँच गाँवों को गोद लेती हैं, इन गाँव समुदायों के आर्थिक और सामाजिक बेहतरी में योगदान करती हैं । अपने ज्ञानकोष का उपयोग करते हुए ग्रामीण वास्तविकताओं को समझने में प्राध्यापक और उच्च शिक्षण संस्थाओं के छात्रों को शामिल करती हैं। और मौजूदा नवीन तकनीकों को पहचानती हैं तथा उनका चयन करती हैं। और प्रौद्योगिकियों के अनुकूलन या अभिनव समाधान के लिए कार्यान्वयन विधियों को सक्षम बनाती हैं। तकनीकी शिक्षा संस्थान विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के सुचारू क्रियान्वयन के लिए विकासशील प्रणालियों में योगदान देंगे। अपने प्राध्यापक और छात्रों के माध्यम से संस्थान, गोद लिए गए गांवों में रहने की स्थिति का अध्ययन करेंगे। स्थानीय समस्याओं और जरूरतों का आकलन करेंगे। तकनीकी हस्तक्षेपों का लाभ उठाने की कसरत की संभावनाएं और विभिन्न सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन में प्रक्रियाओं में सुधार करने की जरूरत की पहचान करेंगे। और चयनित गांवों के लिए व्यावहारिक कार्य योजना तैयार करेंगे। 3 मई को क्षेत्रीय समन्वय संस्थाओं (आरसीआई) के साथ एमजीएनसीआरई में एक संवादात्मक वेबिनार आयोजित किया गया था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत, यूबीए के मिशन द्वारा स्थानीय सरकार के समन्वय में काम करते हुए प्राध्यापक और छात्रों की भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की प्रगति के लिए उच्च शिक्षा के प्रमुख संस्थाओं में उपलब्ध प्रौद्योगिकी को बदलना केंद्र सरकार का एक सपना है। इस संबंध में आईआईटी-नई दिल्ली नामित राष्ट्रीय समन्वय संस्थान (एनसीआई) है और देश भर में आईआईटी, एनआईटी, एनआईटीटीटीआर, केंद्रीय विश्वविद्यालयों और कृषि विश्वविद्यालयों सहित 40 प्रमुख संस्थानों की पहचान क्षेत्रीय समन्वय संस्थानों (आरसीआई) से की गई। उन्हें उनके पिछले प्रदर्शन और अवसंरचनात्मक क्षमता के आधार पर आरसीआई के रूप में चुना गया था। एमजीएनसीआरई उन 40 राष्ट्रव्यापी (आरसीआई) में से एक है । तेलंगाना राज्य में तीन आरसीआई में से एक है। इस वर्ष आरसीआई के साथ पहली बैठक 6 मार्च 2019 को हुई थी। वेबिनार में नोडल समन्वयक प्रो. वीरेंद्र के. वी. जय ने आरसीआई के नोडल अधिकारियों के साथ बातचीत की और तय प्रक्रिया का पालन करते हुए आईबीए पोर्टल के माध्यम से हर तिमाही में 25 पीआई के नए नामांकन को प्रोत्साहित करके यूबीए की गतिविधियों को मजबूत करने का आह्वान किया।

तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में मुख्यधारा के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लिए क्षमता निर्माण पर परामर्श कार्यशाला - यूनिसेफ-एमजीएनसीआरई

21 मई को यूनिसेफ के साथ एक परामर्श कार्यशाला आयोजित की गई थी। यूनिसेफ के प्रतिभागियों में डॉ. महेंद्र राजाराम ,श्री वेंकटेश अरलीकट्टी, श्री पी नरेंद्र, सुश्री रेनी कुरियन और सुश्री गीता कृष्णा जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचार और यूनिसेफ के विज़न और मिशन को साझा किया। डॉ. डब्ल्यू जी प्रसन्ना कुमार अध्यक्ष एमजीएनसीआरई ने कार्यशाला के उद्देश्य और कार्य-सूची को सूचीबद्ध करते हुए और विचार-विमर्श के लिए टोन सेट करते हुए प्रतिभागियों की अगस्त सभा का स्वागत किया।

उन्होंने जोर दिया कि प्रस्तावित पाठ्यक्रम दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में संस्थागत स्तरों पर देश की पहली पेशकश है। एसडीजी में पाठ्यक्रम समय की आवश्यकता है। आपदा प्रबंधन और सतत विकास के मुख्य मुद्दों में लोगों को अपने समय और संसाधनों का निवेश करने के लिए प्रेरित करने की जरूरत है।

इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि इस पाठ्यक्रम को लेने वाले छात्रों को अपने करियर में समृद्ध महसूस कराया जाए। पहले कुछ बैचों की सफलता भारतीय शिक्षा के इतिहास में महत्त्वपूर्ण मोड़ हो सकती है। पाठ्यक्रम के अंत में, छात्रों को आत्मविश्वास, जिम्मेदार, चिंतनशील, अभिनव व्यक्तियों में बदलना चाहिए जो सामाजिक और बौद्धिक रूप से पर्यावरण प्रबंधन में लगे हुए हैं और मानवता की भलाई के लिए लचीलापन ले आ सकते हैं।

डॉ. महेंद्र राजाराम ने हाल ही में संपन्न जिनेवा समझौता एवं आपदा प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक मूल्यांकन रिपोर्ट पर ध्यान केंद्रित किया। एसडीजी लक्ष्यों को जोखिम में कमी कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। चुनौती एसडीजी लक्ष्यों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना है। सुश्री रेनी कुरियन ने अंतर्राष्ट्रीय विकास में अपनी विशेषज्ञता के साथ, एसडीजी के साथ प्रौद्योगिकी को जोड़ने पर जोर दिया। विभिन्न क्षेत्रों में अन्योन्याश्रितता है और दृश्यता महत्त्वपूर्ण है। 17 लक्ष्यों और 169 लक्ष्यों में से, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम इन्हें पाठ्यक्रम में कैसे एकीकृत कर सकते हैं। मानव क्षमता को न केवल गरीबी के संदर्भ में बल्कि आय / खपत से परे अभाव के रूप में भी मापा जाता है। जल, स्वच्छता और स्वच्छता (डब्ल्यूएएसएच) अधिकारी श्री ए वेंकटेश को खतरों और डब्ल्यूएएसएच के एकीकरण के संभावित तरीकों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। वह खुश थे कि इस मंच का उपयोग लक्ष्य 6 एसडीजी- यानी पानी और स्वच्छता के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। लक्ष्य विन्यास में "सुरक्षित रूप से प्रबंधित पानी और स्वच्छता" के लिए एक प्रमुख बदलाव की आवश्यकता है। यूनिसेफ के विषय विशेषज्ञ श्री पी नरेंद्र, जल संसाधन और सुरक्षा विशेषज्ञ और सलाहकार हैं, उन्हों ने सुरक्षा योजना पर जोर दिया। स्वजल कार्यक्रम उनके कार्य का एक क्षेत्र रहा है। जोखिम में कमी और एसडीजी को समझने छात्रों के लिए एक मजबूत आधार होना चाहिए। सुश्री गीता कृष्णा, यूनिसेफ (डब्ल्यूएएसएच) के ज्ञान प्रबंधन सलाहकार ने विजन प्रबंधन, डब्ल्यूएएसएच नवोन्मेष, जनजातीय क्षेत्रों में साम्य और क्षमता निर्माण पर बात की। और आगे कहा कि ज्ञान हस्तांतरण के बिना जितना भी खर्च किया जाये वह पैसे की बर्बादी है पाठ्यक्रम के विकास के लिए एक बहु अनुशासनिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि पाठ्यक्रम की अदला बदली एक प्रमुख तत्व है । तेलंगाना राज्य (वर्तमान में 10 जिले) के लिए एमएनएनसीआरईआरई का काम, उन्नत भारत अभियान (यूबीए) क्षेत्रीय समन्वय संस्थान (आरसीआई) के रूप में है, जो पहल के गहन क्षेत्र परीक्षण में मदद करेगा।

जोखिम की सूचना देने वाले प्रोग्रामिंग के लिए मार्गदर्शन पर यूनिसेफ कार्यशाला (जीआरआईपी), हैदराबाद

यूनिसेफ और तेलंगाना सरकार द्वारा आयोजित जीआरआईपी कार्यशाला

यूनिसेफ हैदराबाद की प्रमुख सुश्री मीतल रस्दिया ने प्रतिभागियों और अतिथियों को संबोधित किया। उन्होंने तेलंगाना राज्य के विशेष संदर्भ के साथ भारत में होने वाले प्रमुख जोखिमों और खतरों पर बात की। मुख्य अतिथि श्री राजेश्वर तिवारी, राजस्व विभाग के प्रमुख सचिव। तेलंगाना राज्य ने आयोजकों और प्रतिभागियों को तेलंगाना में आपदा प्रबंधन प्रणाली को मजबूत करने की सलाह दी। उन्होंने जान और माल को बचाने के लिए सावधानियों पर ध्यान देने का भी आह्वान किया।श्री सरबजीत, आईसीओ, यूनिसेफ नई दिल्ली ने बाल केंद्रित जोखिमों के बारे में चर्चा की।श्री लार्स बर्नड, आपदा जोखिम और लचीलापन अनुभाग के प्रमुख, आईसीओ यूनिसेफ ने प्राकृतिक खतरों को संबोधित करते हुए कहा कि विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं द्वारा मानव समाज के सामने आने वाले जोखिमों को कम किया। डॉ. महेंद्र राजाराम, समन्वयक, श्री अमल कृष्णा और श्री जेवियर ने कार्यशाला के कार्यप्रणाली और उद्देश्यों की समीक्षा की। तेलंगाना राज्य विकास योजना संस्था के सीईओ श्री शैक मीरा ने "तेलंगाना में महिलाओं और बच्चों पर जोखिम प्रभाव – उद्भासनज और कोमलता" पर एक वीडियो प्रस्तुत किया। उन्होंने तेलंगाना की जलवायु परिस्थितियों की विस्तृत तस्वीर भी दी। श्री विकास और सुश्री प्रशांति ने "द वर्ल्ड थ्रू द आई ऑफ ए चाइल्ड" पर एक प्रस्तुति दी। समूह कार्य सत्र आयोजित किए गए, सत्र में गर्मी की लहर, सूखा, औद्योगिक अपशिष्ट, बाढ़ और शहरी बाढ़ सहित विषयों पर प्रस्तुतियां दी गईं। सुश्री सरवानी पांडे और श्री प्रभाकर बानला सहित एमजीएनसीआरई टीम ने समूह में लंबाई पर चर्चा के बाद कार्यशाला में उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर गर्मी के लहर पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। एक लघु फिल्म "जो बच्चों को कैसे प्रभावित करती है और कैसे जोखिम को कम करती है।" दिखाई गई ।

जीआरआईपी जोखिमों का विश्लेषण करने और प्रोग्रामिंग को समायोजित करने या विश्लेषण हेतु नई प्रोग्रामिंग विकसित करने के लिए देश के कार्यालयों और भागीदारों के लिए एक पद्धति प्रदान करता है।

एमजीएनसीआरई में ई-लर्निंग सेंटर पूरी तरह से विकसित हो रहा है विषय वस्तु और उद्योग के विशेषज्ञ अपनी बातचीत रिकॉर्ड करते हुए -

7 मई को डॉ. लेनिन बाबू ने घन और द्रव्य अपशिष्ट प्रबंधन के गैर-प्रबंधन की लागत पर बात की

11 मई को श्री सौरभ मनुजा फैलो टीईआरआई ने ईआईए पर बात की

14 मई को डॉ. लियोन राज, वैज्ञानिक सीएसआईआर नेस्ट "अपशिष्ट प्रबंधन बैंकों" पर उनकी विशेषज्ञता को देखते हुए

7 मई को डॉ. लेनिन बाबू ने घन और द्रव्य अपशिष्ट प्रबंधन के गैर-प्रबंधन की लागत पर बात की

उत्तर प्रदेश

21 मई प्रायोगिक शिक्षा पर एक दिवसीय कार्यशाला - गांधीजी की नई तालीम में वीबीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर यूपी

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अरुण कुमार सिंह, पूर्व. प्राचार्य, टी.डी.पी.जी. महाविद्यालय, जौनपुर ने माल्यार्पण किया। अन्य प्रतिनिधियों में डी आर शामिल थे। नरेंद्र कुमार सिंह, प्राचार्य, आर.एच.एस. महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (अध्यक्ष), और डॉ. समरबहादुर सिंह, एच.ओ.डी. शिक्षा संकाय, टी.डी.पी.जी. कॉलेज, जौनपुर (सम्मानित अतिथि), और डॉ. जय कुमार मिश्रा, समन्वयक, गांधी अध्ययन केंद्र, आर.एच.एस. महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (संसाधन व्यक्ति)। डॉ. अनिल कुमार दुबे एमजीएनसीआरई के संसाधन व्यक्ति थे। डॉ. अरुण कुमार सिंह ने महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और दर्शन के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. जय कुमार मिश्र ने अपने टिप्पणी में कहा कि हमें मूल्यवान शिक्षा की ओर लौटने की जरूरत है। गांधीजी का शिक्षा दर्शन सत्य, अहिंसा और कार्य का समावेश है। डॉ. समर बहादुर सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि किन बदलावों की जरूरत है और इसे व्यावहारिक रूप में कैसे लागू किया जाए।

उन्होंने नीति निर्माताओं से अपेक्षा की है कि वे पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए, व्यावहारिक क्षेत्र की चुनौतियों पर ध्यान की ओर संकेत किया । उन्होंने आगे कहा कि यदि शिक्षा राष्ट्र का निर्माण नहीं करती है, तो ऐसी शिक्षा का कोई महत्व नहीं हो सकता।

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. नरेंद्र कुमार सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत की आत्मा गाँवों में है । गाँधीजी के अनुसरण से गाँवों में मूल्य शिक्षा बेहतर होगी और यह कि नई तालीम सामाजिक परिवर्तन की शिक्षा है। इस शिक्षा का उद्देश्य सभी को शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक विकास प्रदान करना है। समग्र दृष्टि की शिक्षा से ही जिम्मेदार नागरिकों का विकास संभव होगा। इस कार्यशाला में विभिन्न कॉलेजों के 25 शिक्षकों ने भाग लिया।

राजस्थान

मोहन लाल सुखाड़िया में नई तालीम पर कार्यशाला विश्वविद्यालय उदयपुर - 27 मई

27 मई को शिक्षा संकाय, एमएलएसयू, उदयपुर और एमजीएनसीआरई ने एक दिन की कार्यशाला "नई तालीम अनुभवजन्य अधिगम सामुदायिक अनुबंध" पर आयोजित की गई, जिसमें 32 प्रतिभागियों के साथ एमएलएसयू, उदयपुर के शिक्षक शिक्षा संस्थान शामिल हैं।

डॉ. अल्पना सिंह, प्रमुख, शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय, एमएलएसयू, उदयपुर कार्यशाला के सह-समन्वयक थे। कार्यशाला का उद्घाटन प्रोफेसर जेपी शर्मा, माननीय कुलपति, एमएलएसयू द्वारा किया गया। प्रोफेसर सी. आर. सुथार, अध्यक्ष, शिक्षा संकाय, एमएलएसयू ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. अनिल कुमार दुबे, वरिष्ठ संकाय सदस्य, एमजीएनसीआरई, और कार्यशाला के समन्वयक ने प्रतिभागियों को कार्यशाला के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। प्रोपेसर जे. पी. शर्मा ने कहा कि बीच में काटे जाने के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की जीवन, जीवन और शिक्षा, शिक्षा सामंजस्यपूर्ण विकास में जीवन और आनंद में आनंद लाती है। डॉ. कुमुद पुरोहित, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, एमएलएसयू ने पहले सत्र को संभाला, जहां डॉ. एस. कुलदीसामी द्वारा विकसित पाठ मॉड्यूल पर आधारित शांति निर्माण और सामुदायिक अनुबंध अभ्यास पांच समूहों में प्रतिभागियों द्वारा किए गए थे। डॉ. मुनमुन शर्मा ने नई तालीम के बारे में प्रतिभागियों को उन्मुख किया - समूह गतिविधियों के माध्यम से मूल्यों को बढ़ाने के लिए एक दृष्टिकोण। समूहों को गांधीजी के जीवन से संबंधित प्रेरक सामग्री, कविताएँ, प्रार्थनाएँ वितरित की गईं। डॉ. सपना मावतवाल ने नई तालीम: शिक्षा के गांधीवादी दर्शन पर चर्चा की।

उन्होंने एक प्रेरणादायक फिल्म वृत्तचित्र 'एक कोशिश' प्रदर्शित किया। सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने चर्चा की कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली गांधीवादी शिक्षा दर्शन से बिल्कुल अलग कैसे है: नई तालीम? क्या कमियां हैं और क्या कदम उठाए जाने चाहिए? प्रतिभागियों को नई तालीम- आनंद निकेतन नामक एक वृत्तचित्र भी दिखाया गया था।

4 मई को सी. आर. सुथार डॉ एनएसएस समन्वयक मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर राजस्थान के साथ गोल मेज बैठक

4 मई को डॉ. अल्पना सिंह एचओडी शिक्षा विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर राजस्थान के साथ गोल मेज बैठक

3 मई को डॉ. जेएस शेखावत डीन एजुकेशन, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर राजस्थान के साथ गोल मेज बैठक

25 मई को बनस्थली विद्यापीठ टोंक में डॉ. लक्ष्मी गुप्ता, प्रो. कविता मित्तल, डॉ. अनिल कुमार दुबे (एमजीएनसीआरई), डॉ. अजय सुराणा (प्रमुख, शिक्षा), डॉ. महेश कुमार गंगल, श्रीमती वंदना शर्मा के साथ गोल मेज बैठक।

कर्नाटक

6 मई को मैसूर विश्वविद्यालय में नई तालीम पर कार्यशाला

कार्यशाला में 36 प्रतिभागी थे। मुख्य अतिथि प्रो. निंगम्मा सी. बेट्सुर, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग के अध्ययन विभाग में थे। उन्होंने कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में दर्शकों को जानकारी दी। उसने कहा कि कई शिक्षक सिर्फ छात्रों को जानकारी दे रहे हैं और उन्हें नहीं पढ़ा रहे हैं, लेकिन सच्ची शिक्षा केवल अनुभव के माध्यम से हो सकती है और आज की कार्यशाला में इसका प्रदर्शन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सीखने को संज्ञानात्मक, मिलनसार और साइकोमोटर डोमेन शामिल करना चाहिए। एमजीएनसीआरई के संसाधन व्यक्ति डॉ. बी. दिवाकर ने दर्शकों को कार्यशाला के मिशन के बारे में बताया। समूह के सभी सदस्य चर्चा और चार्ट तैयार करने में शामिल थे। समूह के एक सदस्य ने सभी प्रतिभागियों को एमजीएनसीआरई द्वारा प्रायोगिक शिक्षण के निर्दिष्ट अध्याय को

7 मई को प्रोफेसर श्रीकांत, पीएमएमएमएनएमटीटी में प्रिंसिपल आरआईई मैसूर के साथ गोल मेज सम्मेलन

8 मई को आईआईएससी बैंगलोर यूबीए और पीएमएमएनएमटीटी - आईआईएससी बैंगलोर में प्रो. अनुराग कुमार निदेशक आईआईएससी बैंगलोर के साथ गोल मेज सम्मेलन

प्रोफेसर हेगडे आईआईएससी बैंगलोर डॉ. अरविंदा आईआईएससी बैंगलोर डॉ. जोगेन्दर सिंह आईआईएससी

9 मई को बैंगलोर विश्वविद्यालय में गोल मेज सम्मेलन

कुलपति प्रो. आई. एस शिवकुमार निदेशक एचआरडीसी, प्रो. उमने कुमसू प्रमुख शिक्षा विभाग, नारायण डीन शिक्षा विभाग के साथ गोल मेज सम्मेलन ।

डॉ. पी. एस. श्रीनाथ रजिस्ट्रार के साथ आईएसईसी बैंगलोर में और श्रीमती. अश्विनी लेखा अधिकारी के साथ गोल मेज सम्मेलन

गोल मेज

पश्चिम बंगाल

प्रस्तुत किया।

3 मई को एचआरडीसी जादवपुर विश्वविद्यालय, साल्ट लेक कैंपस, कोलकाता, 6 मई को मौलाना अबुल कलाम आज़ाद प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोलकाता, 7 मई को एचआरडीसी बर्दवान विश्वविद्यालय, 13 से 16 मई को एंटरप्राइज़ डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट कोलकाता, 24 से 25 मई को डायमंड हार्बर वीमेंस यूनिवर्सिटी, दक्षिण परगना, 29 मई को नेताजी सुभाष ओपन

उद्यम विकास संस्थान कोलकाता

Roundtables

कुलपति, नेताजी सुभाष ओपन के साथ विश्वविद्यालय, कोलकाता

डायमंड हार्बर महिला विश्वविद्यालय में गोल मेज

दिल्ली

10 मई को सीपीडीएच, दिल्ली विश्वविद्यालय में गोल मेज सम्मेलन

Roundtables

29 मई को जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में प्रो - अनीसुर रहमान निदेशक यूजीसी-एचआरडीसी, प्रो. ए. एम. खान के साथ गोल मेज सम्मेलन की शुरुआत

15 मई 2019 को यूजीसी-एचआरडीसी जेएनयू दिल्ली में प्रो. माधवगोविंद निदेशक यूजीसी-एचआरडीसी के साथ गोल मेज सम्मेलन

हरियाणा

24 मई को इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरापुर, रेवाड़ी, हरियाणा में कार्यशाला

माननीय वाइस चांसलर प्रोफेसर एस के गखर ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और एमजीएनसीआरई के साथ सहयोग का स्वागत किया। उन्होंने प्रतिभागियों से कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेने और सामुदायिक अनुबंध पाठ्यक्रम के साथ आने का आग्रह किया जिससे राज्य के छात्र शिक्षकों और विद्यालयों के छात्रों को लाभ होगा। उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्षमता, आत्मविश्वास निर्माण, सहिष्णुता और कौशल के इर्द-गिर्द घूमती गांधीवादी विचारधारा के एकीकरण का भी स्वागत किया। राज्य में शिक्षा के सभी स्तरों पर नई तालीम को लागू करने के लिए प्राध्यापक विकास कार्यक्रम आयोजित करने पर भी चर्चा हुई। एमजीएनसीआरई संसाधन व्यक्ति डॉ. शत्रुघ्न भारद्वाज ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों तथा एक दिवसीय कार्यशाला को साझा किया। इसके बाद उनके विभाग के लिए नई तालीम पाठ्यक्रम अनुकूलन और प्राध्यापक विकास कार्यक्रम के लिए प्रस्तावित तारीखों पर चर्चा हुई।.

21 मई को आईजी यूनिवर्सिटी, मीरापुर, रेवाड़ी, हरियाणा में - प्रोफेसर डॉ. एसके गक्खड़, कुलपति, प्रो. डॉ. सुनीता कुमारी, डीन, सामाजिक विज्ञान स्कूल, डॉ. अनिल कुमार, एचओडी, शिक्षा विभाग, डॉ. रीना हुड, प्रबंधन विभाग में गोल मेज सम्मलेन

गोल मेज

नई तालीम पर सीडीएलयू, सिरसा, हरियाणा में कुलसचिव और संकाय अध्यक्ष के साथ गोल मेज सम्मलेन

30 मई को गुरुग्राम विश्वविद्यालय गुरुग्राम में गोल मेज सम्मलेन

हरियाणा के केंद्रीय विश्वविद्यालय में संकाय अध्यक्ष और विभाग अध्यक्ष के साथ नई तालीम पर गोल मेज सम्मलेन

एचआरडीसी, बीपीएस महिला विश्वविद्यालय, खानपुर, सोनीपत, हरियाणा में

पंजाब

एचआरडीसी पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ में डॉ. जयंती दता, उप निदेशक के साथ बैठक

गोल मेज

प्रो योगराज के साथ, एचआरडीसी के निदेशक, पंजाबी

18 मई को पंजाब विश्वविद्यालय ,चंडीगढ, में बीओसएस के साथ

मध्यप्रदेश

16 मई को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर में गोल मेज सम्मलेन

गोल मेज

प्रो. सरदूल सिंह संधू, यूबीए समन्वयक आरडीवीवी जबलपुर

कुलपति रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के साथ,

जम्मू और कश्मीर

एनआईटी श्रीनगर में यूबीए के क्षेत्रीय निदेशक के साथ बैठक

केंद्रीय विश्विद्याल कश्मीर में बोर्ड ऑफ स्टडीज के साथ बैठक

केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रबंधन विभाग के साथ गोलमेज बैठक

गोल मेज

केन्द्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर में जनसंचार और पत्रकारिता विभाग के साथ बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक

क्लस्टर यूनिवर्सिटी श्रीनगर में गांधीवादी अध्ययन केंद्र का उद्घाटन

केंद्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर में पी एंड जी विभाग के साथ पाठ्यचर्या की हस्तक्षेप बैठक

केंद्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर अभिसरण पत्रकारिता विभाग

सिक्किम

सिक्किम विश्वविद्यालय में यूबीए समन्वयक, प्रो. पीसी चेत्री के साथ गोलमेज बैठक

गोल मेज

प्रो (डॉ) आशीष शर्मा, निदेशक और यूबीए समन्वयक के साथ सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय में गोलमेज बैठक

कुलपति लेफ्टिनेंट जनरल (डॉ) एम. डी. वेंकटेश के साथ सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय में गोलमेज बैठक

कुलसचिव और यूबीए समन्वयक के साथ विनायक विश्वविद्यालय में गोलमेज बैठक

आंध्रप्रदेश

गोल मेज

28 मई को एचआरडीसी आंध्र विश्वविद्यालय में प्रो. पी. वीस्वनाधम, निदेशक एचआरडीसी और प्रो. एन डी पाल उप निदेशक के साथ गोलमेज बैठक

29 मई को गायत्री विद्या परिषद कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, विशाखापट्टनम में डॉ. एस. अचुताराम, अकादमिक कार्यक्रमों के संकाय अध्यक्ष, वाई सी.वी. कोंडैया, एसिस्ट. प्रोफेसर और यूबीए समन्वयक के साथ गोलमेज बैठक

आंध्रप्रदेश विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के प्रमुख प्रो.जी.लचान्ना के साथ गोलमेज बैठक

29 मई को आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय में इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन एजुकेशन के प्रिंसिपल प्रो.आर शिव प्रसाद के साथ गोलमेज बैठक

30 मई को विज्ञान और विशाखापतनम के विशाखापतनम संस्थान में, डॉ. के. मद्दसुधना राव, वाइस प्रिंसिपल, डीन और यूबीए समन्वयक के साथ गोल मेज

गोल मेज

30 मई को श्री वाई.वामशीधर, प्रधानाचार्य, और श्री पी. महेश, यूबीए समन्वयक, एन.साई वरुण, एनएसआरआईटी के संवाददाता, (पूर्व में वीटीएस, संस्थानों के समूह के रूप में जाना जाता है), सोनितम, पेंदुर्थी, विशाखापट्टनम के साथ गोल मेज बैठक।

यूबीए समन्वयक प्रो श्री कोना साई राघव के साथ राउंडटेबल मीटिंग, वेलफेयर इंस्टीट्यूट ऑफ वेलफेयर इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी पेंदुर्थी, विशाखापट्टनम, 30 मई

अनिल नीरुकोंडा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज, संघवलासा, विशाखापतनम में ए.संतोष कुमार, प्रशासकीय अधिकारी, डी. विश्वनाथ, सहायक प्रशासनिक के साथ गोल मेज बैठक

तेलंगाना

वीएनआर विज्ञान ज्योति इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी बचुपल्ली प्रिंसिपल और यूबीए समन्वयक डॉ. पद्मावती के साथ गोल मेज बैठक

प्रिंसिपल, यूबीए समन्वयक और सभी विभाग के विभागाध्यक्ष स्फूर्ती इंजीनियरिंग कॉलेज में, यूबीए की बैठक

29 मई को एसीई इंजीनयिरगि कॉलेज में ए.ओ. डॉ.बी.एल.राजू पुराचार्य, श्री एस शास्त्री के साथ, गोल मेज सम्मलेन

17 मई को जेएनटीयूएच अन्नामचार्य संस्थान में पी.वी.कृष्ण मूर्ति प्रौद्योगिकी और विज्ञान के प्राचार्य डॉ. के. सुंदर कुमार, यूबीए समन्वयक के साथ यूबीए की बैठकें भी हुईं, 16 मई को एमवीएसआर इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जी कनक दुर्गा के साथ, 7 मई डॉ. राजेश नरसिम्हा मूर्ति, यूबीए, एनएसएस समन्वयक के साथ जेएनटीयूएच मल्ला रेड्डी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के साथ, 6 मई को टी. संजीव राव यूबीए के साथ एनटीयूएच मल्ला रेड्डी इंजीनियरिंग कॉलेज समन्वयक, मल्ला रेड्डी इंजीनियरिंग कॉलेज ।.

9 मई को यूबीए समन्वयक के साथ उस्मानिया विश्वविद्यालय में प्रो. गणेश चिन्त होड समाजशास्त्र और दूरस्थ शिक्षा उस्मानिया विश्वविद्यालय के निदेशक, डॉ. रामैया और डॉ. श्रीधर सामाजिक कार्य विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में जेएनटीयू के प्रो नरसिम्हुलु के साथ गोल मेज बैठक

श्रेयस इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड साइंस के प्रिंसिपल श्री सुरेश अकेला यूबीए समन्वयक सुश्री जी सविता के साथ गोलमेज बैठक

8 मई को सीएमआर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में – डॉ. वी. नारायण, प्रिंसिपल, यूबीए समन्वयक 1- डॉ. मेरुगु सुरेश, यूबीए समन्वयक 2 और एनएसएस समन्वयक. एम. नागाराजू नाइक, फील्ड विजिट समन्वयक के साथ

हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय में यूबीए समन्वयक डॉ. श्रीनिवास राव के साथ गोलमेज बैठक

सिद्धार्थ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज में अध्यक्ष, प्राचार्य और संकाय के साथ गोलमेज बैठक

18 मई को यूबीए जेएनटीयूएच विद्या विकास प्रौद्योगिकी संस्थान डॉ. जे. ससी किरण यूबीए समन्वयक के साथ

जेएनटीयू प्रोफेसर नरसिम्हुलु के साथ,

नागोल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस में प्रिंसिपल और यूबीए समन्वयक के साथ गोलमेज बैठक

डॉ. वाका मुरली मोहन, प्रिंसिपल और यूबीए समन्वयक सीएच वी. कृष्ण मोहन के साथ मल्ला रेड्डी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग फॉर वूमेन की गोलमेज सम्मलेन

एमजीएनसीआरई के बारे में लोगों की राय

मैं पाठ्यक्रम विकास का हिस्सा बनकर खुश हूँ। मुझे यह अवसर देने के लिए एमजीएनसीआरई का बहुत-बहुत धन्यवाद, डॉ. अरुणा सोनवाने, सिम्बायोसिस ओपन स्किल्स यूनिवर्सिटी, मुंबई ।

एमजीएनसीआरई के साथ बातचीत करना खुशी की बात है। मैं विकासशील पाठ्यक्रम के रूप में एमजीएनसीआरई के साथ जुड़कर बहुत खुश हूं और भविष्य में इससे जुड़ने की उम्मीद करता हूँ।

एमजीएनसीआरई के साथ काम करना अनूठा था, अनुशासन की एक अलग उड़ान। बहुत व्यवस्थित दृष्टिकोण, स्पष्ट संचार और बहुत कुशल और टीम के साथ काम करना वास्तव में अद्भुत था। डॉ. अनुपमा हर्षल, वैज्ञानिक और सलाहकार, एमएचआरडी।

सत्यमेव जयते

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

उच्च शिक्षा विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

5-10-174, शक्कर भवन, ग्राउंड फ्लोर, फ़तेह मैदान रोड, हैदराबाद, तेलंगाना - 500 004.
तेलंगाना राज्य. दूरभाष: 040-23422112, 23212120, फैक्स: 040-23212114 ई-मेल: editor@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.org
संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यूजी प्रसन्ना कुमार, अध्यक्ष एमजीएनसीआरई, डॉ. डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया वी और शिवराम जी,
श्री पी मुरली मनोहर सदस्य-सचिव एमजीएनसीआर द्वारा प्रकाशित